[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 8934 **IC**

Unique Paper Code : 12051201

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Aadikal Aur Madhyakal)

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।**

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा का परिचय दीजिए। (14)

अथवा

हिन्दी साहित्य का काल-विभाजन किन-किन आधारों पर किया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

2. आदिकालीन साहित्य के राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य पर प्रकाश डालिए। (14)

अथवा

P.T.O.

आदिकालीन लौकिक काव्य की विशेषताएँ बताइए।

3. भक्तिकालीन सूफ़ी शाखा की प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए। (14)

अथवा

'भक्ति-काल हिंदी साहित्य का स्वर्ण-काल है', इस कथन की विवेचना कीजिए।

4. रीतिबद्ध एवं रीतिमुक्त काव्य का अंतर बताते हुए उनकी विशेषताएँ रेखांकित कीजिए। (14)

अथवा

रीतिकालीन साहित्य की युगीन पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

5. (क) किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए: (6,6)

(i) रीतिकाल का नीतिकाव्य

(ii) निर्गुण काव्य धारा

(iii) नवधा भक्ति

(iv) रासो काव्य

(ख) किसी **एक** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए: (7)

(i) कबीरदास

(ii) बिहारीलाल

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9117 **IC**

Unique Paper Code : 12051202

Name of the Paper : Hindi Kavita (Reetikaleen Kavya)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. केशव की अलंकार-योजना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रहीम के दोहों की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। (12)

2. 'बिहारी ने अपने दोहों में 'गागर में सागर भर दिया है।' इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

बिहारी के काव्य में निहित शिल्प-सौन्दर्य पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (12)

P.T.O.

3. घनानंद की कविता के भाव-पक्ष का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

घनानंद की काव्य-कला की विवेचना कीजिए। (12)

4. भूषण के भाषिक वैशिष्ट्य को रेखांकित कीजिए।

अथवा

गिरिधर कविराय के काव्य में व्यक्त आदर्शों की चर्चा कीजिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) राजत रंच न दोष युत कविता बनिता मित्र।
बुंदक हाला परत ज्यों गंगाघट अपवित्र।
जदपि सुजाति सुलक्षणी, सुबरन सरस सुबृत्त।
भूषण बिनु न बिराजई, कविता बनिता मित्त।

अथवा

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन।
रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँके तीन।। (8)

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोई।
जा तन की झाँई परैं, स्यामु हरित-दुति होई।

रनित भृंग-घंटावली, झरति दान मधु-नीरु।
मंद-मंद आवतु चल्यौ, कुंजरु कुञ्ज-समीरु।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं-ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै।
एक ही जीवन हुतौ सु तौ बार्‌यौ सुजान संकोच और सोच सहारियै।
रोकी रहै न दहैं घनआनंद बावरी रीझ के हाथनि हारियै।

(7)

6. दिये गये निर्देशों के आधार पर किन्हीं दो अवतरणों का रचना-कौशल (लगभग 150 शब्दों में) उद्‌घाटित कीजिए :

(क) बानी जगरानी की उदारता बखानी जाय, ऐसी मति उदित उदार कौन की भई।

देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज तप-वृद्ध, कहि कहि हारे सब कहि न काहू लई।

भावी, भूत, बर्तमान जगत बखानत है, केशोदास क्योंहू न बखानी काहू पै गई।

बणै पति चारि मुख, पूत बणै पाँचमुख, नाती बणै षटमुख तदपि नई नई।

(भाषा-सौंदर्य)

(ख) बेद राखे बिदित पुरान परसिद्ध राखे राम-नाम राख्यो अति रसना सुघर में।

हिंदुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की काँधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में।

मीड़ि राखे मुगल मरोड़ि राखे पातसाह बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।

राजन की हद्द राखी तेगबल सिवराज देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में।

(भाव-सौंदर्य)

(ग) साईं बैर न कीजिए, गुरु, पंडित, कवि, यार
बेटा, बनिता, पँवरिया, यज्ञ करावन हार
यज्ञ करावन हार, राजमंत्री जो होई
विप्र, परोसी, वैद, आपको तपै रसोई
कह गिरिधर कविराय, युगन ते यह चलि आई
इन तेरह सों तरह दिए, बनि आवै साईं ।।

(नीति-सौंदर्य)

(घ) पहले अपनाय सुजान सनेह सों क्यों फिरि नेह कै तोरियै जू।
निरधार अधार दै धार-मँझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
घनआनंद आपने चातिक कों गुन-बाँधिलैं मोह न छोरियै जू।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस बिसास मैं यौं बिष घोरियै जू।।

(रस-व्यंजना)

(6+6=12)

(3000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9469 **IC**

Unique Paper Code : 62051202

Name of the Paper : MIL, Hindi Bhasha Aur Sahitya – A

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi A – CBCS**

Semester : II

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) कबीर इस संसार कों, समझाऊँ कै बार ।
पूँछ जु पकड़ै भेद की, उतर्‌या चाहै पार ।।
जैसी मुष तैं नीकसै, तैसी चालै नाहिं ।
मानिष नहीं ते स्वान गति, बांध्या जमपुर जांहिं ।।

अथवा

P.T.O.

मण थें परस हरि रे चरण ।।

सुभग सीतल कँवल कोमल, जगत ज्वाला हरण ।

जिण चरण प्रह्लाद परस्याँ, इन्द्र पदवी धरण ।

जिण चरण ध्रुव अटल करस्याँ, सरण असरण सरण ।

जिण चरण ब्रह्मांड भेट्याँ, नखसिखाँ श्री धरण ।

जिण चरण कालियाँ णाथ्याँ, गोपी लीला करण ।

जिण चरण गोबरधन धारयाँ, गरब मधवा हरण ।

दासि मीरा लाला गिरधर, अगम तारण तरण ।

(ख) चल्यौ जाइ, ह्याँ को करै हाथिनु के व्यापार ।

नहिं जानतु, इहिं पुर बसैं धोबी, ओड़, कुँभार ।।

नीच हियैं हुलसे रहैं गहे गेंद के पोत ।

ज्यौं ज्यौं माथैं मारियत, त्यौं त्यौं ऊँचे होत ।।

अथवा

रूपनिधान सुजान लखें बिन आंखिन दीठि हि पीठि दई है ।

ऊखिल ज्यौं खरकै पुतरीन मैं, सूल की मूल सलाक भई है ।

ठौर कहूँ न लहै ठहरानि को मूदें महा अकुलानिमई है ।

बूडत ज्यौ घनआनँद सोचि, दई बिधि ब्याधि असाधि नई है ।।

(ग) अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।
इस तत्त्व पर ही कौरवों से पाण्डवों का रण हुआ,
जो भव्य भारतवर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ।।

अथवा

अमल धवलगिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है।
छोटे-छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

2. किसी **एक** कवि का साहित्यिक परिचय दीजिए : (10)

(क) बिहारी ;

(ख) घनानंद ।

3. कबीर के दोहों के आधार पर उनकी भक्ति के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। (10)

अथवा

मीरा के पदों का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. 'भेरे नगपति मेरे विशाल' ('हिमालय के प्रति') कविता के मूल कथ्य पर विचार कीजिए। (10)

अथवा

'जयद्रथ वध' के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त जी की काव्य भाषा का विचार कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (5×3=15)

(i) हिंदी भाषा की व्युत्पत्ति ;

(ii) ब्रजभाषा ;

(iii) आदिकालीन साहित्य की विशेषताएँ ;

(iv) कृष्ण भक्ति धारा ;

(v) रीतिमुक्त काव्य ;

(vi) नई कविता।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9470 **IC**

Unique Paper Code : 62051203

Name of the Paper : Hindi B

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **तीन** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10 + 10 + 10 = 30)

(क) यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
शीश दिए जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।

अथवा

कृपा सिन्धु बोले मुस्काई। सोइ करू जेहि तव नाव न जाई।।
बेगी आनु जल पाय पखारू। होत बिलंबु उतारहि पारू।।

P.T.O.

जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भव सिन्धु अपारा ।।

सोइ कृपालु केवटहि निहोरा। जेहिं जगु किए तिहु पगहु ते थोरा ।।

(ख) बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ।

सौंह करै भौंहनु हँसे, दैन कहे, नटी जाइ ।।

अथवा

इंद्र जिमि जम्भ पर बाड़व सुंअभ पर, रावण सदम्भ पर रघुकुल राज हैं।

पौन बारिवाह पर संभु रतिनाह पर, ज्यौं सहसबाहु पर राम द्विजराज हैं।

दावा द्रुमदंड पर, चीता मृग झुंड पर, भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज हैं।

तेज तम अंस पर कान्ह जिमी कंस पर, त्यों मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज हैं ।।

(ग) प्रभु ईसा की क्षमाशीलता

नबी मुहम्मद का विश्वास

जीव दया जिनवर गौतम की

आओ देखो इसके पास।

अथवा

काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा, जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे !

2. तुलसीदास **अथवा** कबीर का साहित्यिक परिचय दीजिए। (10)

3. भूषण **अथवा** बिहारी के काव्य का सार लिखिए। (10)

4. 'वर दे वीणावादिनी' अथवा 'बालिका का परिचय' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (10)

5. (क) निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर टिप्पणी लिखिए : (5)

(i) हिन्दी के उद्‌भव का सामान्य परिचय

(ii) हिन्दी के अतिरिक्त किसी एक आधुनिक भारतीय भाषा का परिचय (5 + 5 = 10)

(ख) किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए :

(i) चारण काव्य

(ii) सूफी काव्य

(iii) रीतिमुक्त काव्यधारा

(iv) भारतेंदु युग

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 8884 **IC**

Unique Paper Code : 12051401

Name of the Paper : Bhartiya Kavyashastra
(भारतीय काव्यशास्त्र)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (CBCS)**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. इस प्रश्न-पत्र के **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा का संक्षिप्त परिचय दीजिए ।

अथवा

भारतीय आचार्यों द्वारा निरूपित काव्य लक्षणों पर प्रकाश डालिए ।

(12)

2. रस के भेद बताते हुए शृंगार रस का विवेचन कीजिए ।

अथवा

P.T.O.

लक्षणा शब्द-शक्ति की परिभाषा देते हुए उसके विविध भेदों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए। (12)

3. मुक्तक काव्य **अथवा** खण्ड काव्य का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। (12)

4. (क) किन्हीं **तीन** अलंकारों के लक्षण उदाहरण लिखिए -
अनुप्रास, अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा, श्लेष, वक्रोक्ति, रूपक
(3×3=9)

(ख) किन्हीं **तीन** छंदों के लक्षण-उदाहरण लिखिए -
दोहा, हरिगीतिका, शिखरिणी, चौपाई, द्रुतविलम्बित, कुंडलिया
(3×3=9)

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए - (7×3=21)

(क) काव्य-हेतु

(ख) काव्य-प्रयोजन

(ग) माधुर्य गुण

(घ) अभिधा शब्द शक्ति

(ङ) विभावना और विशेषोक्ति में अंतर।

[This question paper contains 6 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9096 **IC**

Unique Paper Code : 12051402

Name of the Paper : हिंदी कविता (छायावाद के बाद)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (15)

(क) अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रोबीला चेहरा

आहिस्ते से बोलारू हाँ सा'ब

लाख कहता हूँ नहीं मानती मुनिया

टाँगे हुए है कई दिनों से

P.T.O.

अपनी अमानत

यहाँ अब्बा की नजरों के सामने

मैं भी सोचता हूँ

क्या बिगाड़ती हैं चूड़ियाँ

किस जुर्म पे हटा दूँ इनको यहाँ से?

अथवा

जैसे कोई बिजली कौंध जाए

एक दबी हुई स्मृति

झकझोर जाती है मुझे

और मुझे लगता है कहीं मेरे भीतर भी है

एक पागल स्त्री

जो दरवाजों को पीटती

और दीवारों को खुरचती हुई

उसी तरह लगा रही है चक्कर

मेरे उपमहाद्वीप के विशाल नक्शे में

न जाने कब से।

(ख) हाड़-माँस की गठरी-सा जीवन

जीवित जैसे नंगी डाल है,

खड़-खड़ कर उड़ते खग से पत्ते

फैला भू-पर झिलमिल जाल है;

आँखों का स्वप्न मिटा जा रहा है

पुरवैया धीरे बहो।

अथवा

लेकिन इससे भी हैरतअंगेज है चोरी की एक घटना

जो सम्पूर्ण क्षेत्र में आज भी चर्चा का विषय है-

कहते हैं एक चोर सेंध मार घर में घुसा

इधर-उधर टो-टा किया और जब कुछ न मिला

तब चुहानी में रक्खा बासी भात और साग खा

थाल वहीं छोड़ भाग गया-

वो तो पकड़ा ही जाता यदि दबा न ली होती डकार।

2. निम्नलिखित अवतरणों में से **किन्हीं दो** का रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए। (15)

(क) जिनकी सेवाएँ अतुलनीय
पर विज्ञापन से रहे दूर
प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके
कर दिए मनोरथ चूर-चूर!
उनको प्रणाम!

(मूल संवेदना)

(ख) राष्ट्रगीत में भला कौन वह
भारत-भाग्य-विधाता है
फटा सुथन्ना पहने जिसका
गुन हरचरना गाता है।

(व्यंग्यात्मकता)

(ग) इन नये बसते इलाकों में
जहाँ रोज बन रहे हैं नये-नये मकान
मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ

धोखा दे जाते हैं पुराने निशान

खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़

खोजता हूँ ढहा हुआ घर

जमीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बायें

मुड़ना था मुझे ।

(भाव-सौन्दर्य)

3. अज्ञेय की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

'धूमिल की कविता सामान्य जन की पीड़ा को अभिव्यक्ति देती है', इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

4. 'अकाल और उसके बाद' कविता की मूल संवेदना का विवेचन कीजिए । (15)

अथवा

नवगीत-परम्परा में शंभुनाथ सिंह का योगदान स्पष्ट कीजिए ।

5. 'अपनी केवल धार' कविता की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

पाठ्यक्रम में निर्धारित कविताओं के आधार पर केदारनाथ सिंह की काव्य-कला का विवेचन कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9139 **IC**

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : Hindi Paper-X (Hindi Upanyas)

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi (CBCS)**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए : (7.5×2=15)

(क) औरत की ज़िन्दगी और है ही किसलिए बहनजी! वह अपने दिल से लाचार है, जिससे वफा की उम्मीद करती है, वही दग़ा करता है। उसका क्या अख्तियार ? लेकिन बेवफाओं से मुहब्बत न हो, तो मुहब्बत में मजा ही क्या रहे। शिकवा-शिकायत, रोना-धोना, बेताबी और बेकरारी यही तो मुहब्बत के मज़े हैं, फिर मैं तो वफा की उम्मीद भी नहीं करती थी।

P.T.O.

अथवा

"जो अपने से चाहता हूँ। अपने से चाहता हूँ कि निकल चलूँ। इस फैले विश्व में भयभीत को ढाढ़स दूँ। भूखे के लिए अन्न की व्यवस्था करूँ, दम्भी का दम्भ तोड़ूँ संकीर्ण स्वार्थों की दीवारें जो समाज में खड़ी हैं उन्हें ढहा न दूँ तो उनमे द्वार-खिड़कियाँ तो खोल दूँ। तुमसे चाहता हूँ कि जब तक तुम आर्त्त की पुकार सुन सकती हो, तब उस पुकार की तरफ बढ़ भी चलो।"

(ख) "मूर्ख, तूने और तेरे स्वामी ने परलोक देखा है। यह विश्वास ही तेरी दासता है। तू अपने पर स्वामी के अधिकार को स्वीकार करता है, यह तेरी दासता का बंधन है। तू संकट से पलायन कर रक्षा चाहता है, यह तेरी निर्बलता है। संकट सब स्थान और समय में तेरे साथ रहेगा। संकट का पराभाव कर। पराभूत होना ही पाप है। उसका फल तू तत्काल भोगेगा। तू स्वतंत्र 'कर्त्ता' है।"

अथवा

"और इस स्थिति की दो ही परिणतियाँ हो सकती हैं... होंगी। या तो तुम उसके स्वतंत्र अस्तित्व को समाप्त करके उस पर हावी होने की कोशिश करोगी और या फिर अपने को बहुत ही

उपेक्षित और अपमानित महसूस करोगी। उस समय तुम्हें यही लगेगा कि जिसके पीछे तुमने अपनी सारी ज़िंदगी बरबाद की, वह अब तुम्हें ही भूलकर अपनी जिंदगी जीने की बात सोच रहा है।"

2. 'कर्मभूमि' उपन्यास में तत्कालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया गया है। इस कथन की विवेचना कीजिए।

अथवा

'कर्मभूमि' उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए। (15)

3. ''आपका बंटी' उपन्यास में समाज के वर्तमान जीवन की समस्याओं का उद्‌घाटन हुआ है', स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'आपका बंटी' उपन्यास नारी मन की अनेक पर्तों को खोलता है। स्पष्ट कीजिए। (15)

4. 'सुनीता' स्त्रीप्रधान उपन्यास है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"'दिव्या' इतिहास की नई संभावनाओं को संकेत देने वाला उपन्यास है" इस कथन की विवेचन कीजिए। (15)

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (7.5×2=15)

(क) 'दिव्या' उपन्यास की मूल संवेदना ;

(ख) 'आपका बंटी' का कथ्य ;

(ग) 'कर्मभूमि' उपन्यास में नारी-जागृति का स्वर ;

(घ) 'सुनीता' उपन्यास में हरिप्रसन्न का चरित्र-चित्रण ।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9336 **IC**

Unique Paper Code : 62051404

Name of the Paper : Hindi 'A' (हिंदी 'ए')

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi 'A' – CBCS**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. **All** questions are compulsory.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

P.T.O.

1 निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (20)

(क) "न मुझे विद्वता की चाह है, न अनुभव की, न मर्मज्ञता की, न कार्य-कुशलता की। इन गुणों के महत्त्व का परिचय खूब पा चुका हूँ। अब सौभाग्य और सुअवसर ने मुझे वह मोती दे दिया है, जिसके सामने योग्यता और विद्वता की चमक फीकी पड़ जाती है। यह कलम लीजिए और अधिक सोच-विचार न कीजिए, दस्तखत कर दीजिए। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला, बेमुरव्वत, उद्दण्ड, कठोर परन्तु धर्मनिष्ठ दरोगा बनाये रखे।"

अथवा

"अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए, अपनी इच्छा पूरी करने के लिए तुमने मुझे बनाया है। पर, यह ज़रूरी नहीं कि मैं तुम्हारी इच्छानुसार ही चलूँ, मेरा अपना अस्तित्व भी है, मेरे अपने विचार भी हैं।" मैं चिल्ला उठी, "जानते हो, तुम किससे बात कर रहे हो ? वह हँस पड़ा, मैं तुम्हारी स्रष्टा हूँ, तुम्हारी निर्माता! मेरी इच्छा से बाहर तुम्हारा कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं!"

(ख) परन्तु मनुष्य की चरितार्थता प्रेम में है, मैत्री में है, त्याग में है, अपने को सबके मंगल के लिए निःशेष भाव से दे देने में है। नाखूनों का बढ़ना मनुष्य की उस अंध सहजात वृत्ति का परिणाम

है, जो उसके जीवन में सफलता ले आना चाहती है, उसको काट देना उस स्व-निर्धारित आत्म-बंधन का फल है, जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाती है।

अथवा

इसके उपरांत घीसा अच्छा हो गया और धूल और सूखी पत्तियों को बाँध कर उन्मत्त के समान घूमने वाली गर्मी की हवा से उसका रोज संग्राम छिड़ने लगा-झाड़ते-झाड़ते ही वह पाठशाला धूल-धूसरित होकर भूरे, पीले और कुछ हरे पत्तों की चादर में छिप कर तथा कंकालशेषी शाखाओं में उलझते, सूखे पत्तों को पुकारते वायु की संतप्त सरसर से मुखरित होकर उस भ्रांत बालक को चिढ़ाने लगती।

2. हिन्दी कहानी की विकास-यात्रा को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

हिंदी उपन्यास की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. 'मलबे का मालिक' कहानी की संवेदना को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'पुरस्कार' कहानी में राष्ट्रीय भावना एवं व्यक्ति चेतना के द्वन्द्व का चित्रण है - विवेचन कीजिए ।

4. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध में लेखक ने मनुष्य की किस मूलभूत समस्या पर विचार किया है? स्पष्ट कीजिए । (12)

अथवा

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध का सार लिखिए ।

5. 'अंधेर नगरी' में चित्रित व्यंग्य की विभिन्न स्थितियों को सोदाहरण प्रस्तुत कीजिए । (12)

अथवा

'घीसा' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए :- (7)

(क) प्रसादयुगीन नाटक ;

(ख) प्रेमचंदयुगीन कहानी ।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 8719 IC

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : B.A. (H) HINDI – CBCS

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के सन्दर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए - (10×3=30)

(क) भावों के छानबीन करने पर मंगल का विधान करने वाले दो भाव ठहरते हैं - करुणा और प्रेम। करुणा की गति रक्षा की ओर होती है और प्रेम की रंजन ओर। लोक में प्रथम साध्य रहा है। रंजन का अवसर उनके पीछे आता है। अत: साधनावस्था या प्रयत्नपक्ष को लेकर चलने वाले काव्यों का बीजभाव करुणा ही ठहरती है। इसी से शायद अपने दो नाटकों में रामचरित को लेकर चलने वाले महाकवि भवभूति ने 'करुण' को ही एकमात्र रस कह दिया।

P.T.O.

अथवा

जो हो, जब तक साहित्य का काम केवल मनबहलाव का सामान जुटाना, केवल लोरियाँ गा-गाकर सुलाना, केवल आँसू बहाकर जी हल्का करना था, तब तक उसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी। वह एक दीवाना था जिसके गम दूसरे खाते थे। मगर हम साहित्य को केवल मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सचाइयों का प्रकाश हो- जो हममें गति और बेचैनी पैदा करे सुलाए नहीं; क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।

(ख) कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुंदरी के बाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी, तब हिंदी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया। रीतिकालीन प्रचलित परंपरा से - जिसमें बाह्य वर्णन की प्रधानता थी - इस ढंग की कविताओं में भिन्न प्रकार के भावों की नए ढंग से अभिव्यक्ति हुई। ये नवीन भाव आंतरिक स्पर्श से पुलकित थे।

अथवा

आज नाना स्वरों में वैचित्र्य-संवलित आकार धारण करके एक ही उत्तर मानवचित्त की गंभीरतम भूमिका से निकल रहा है; मानववाद ठीक है, पर मुक्ति किसकी ? क्या व्यक्ति-मानव

की ? नहीं, सामाजिक मानववाद ही उत्तम समाधान है। मनुष्य को, व्यक्ति-मनुष्य को नहीं, बल्कि समष्टि मनुष्य को, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक शोषण से मुक्त करना होगा - "नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।"

(ग) यह कहा जा सकता है कि हमारे मूल राग-विराग नहीं बदले- प्रेम अब भी प्रेम है और घृणा अब भी घृणा, यह साधारणतया स्वीकार किया जा सकता है। पर यह भी ध्यान में रखना होगा कि राग वही रहने पर भी रागात्मक संबंधों की प्रणालियाँ बदल गयी हैं; और कवि का क्षेत्र रागात्मक सम्बन्धों का क्षेत्र होने के कारण इस परिवर्तन का कवि कर्म पर बहुत गहरा असर पड़ा है। निरे 'तथ्य' और 'सत्य' में- या कह लीजिए 'वस्तु-सत्य' और 'व्यक्ति-सत्य'-में यह भेद है कि 'सत्य' वह 'तथ्य' है जिस के साथ हमारा रागात्मक संबंध हैय बिना इस संबंध के वह एक बाह्य वास्तविकता है जो तद्वत काव्य में स्थान नहीं पा सकती। लेकिन जैसे-जैसे बाह्य वास्तविकता बदलती है- वैसे-वैसे हमारे उस से रागात्मक संबंध जोड़ने की प्रणालियां भी बदलती हैं- और अगर नहीं बदलतीं तो उस बाह्य वास्तविकता से हमारा संबंध टूट जाता है।

अथवा

सच बात तो यह है कि आज के कवि को एक साथ तीन क्षेत्रों में संघर्ष करना है। उसके संघर्ष का त्रिविध स्वरूप यह है या होना चाहिए : (1) तत्व के लिए संघर्ष; (2) अभिव्यक्ति को

सक्षम बनाने के लिए संघर्ष; (3) दृष्टि-विकास का संघर्ष। प्रथम का संबंध मानव-वास्तविकता के अधिकाधिक सक्षम उद्घाटन-अवलोकन से है। दूसरे का संबंध चित्रण-सामर्थ्य से है। और तीसरे का संबंध थियरी से है, विश्व-दृष्टि के विकास से है, वास्तविकताओं की व्याख्या से है। यह त्रिविध संघर्ष है।

2. रामचंद्र शुक्ल से पूर्व की हिंदी आलोचना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'साहित्य का उद्देश्य' पाठ के आधार पर प्रेमचंद की साहित्य-दृष्टि पर विचार कीजिए।

3. 'आधुनिक साहित्य: नई मान्यताएँ' पाठ के आधार पर हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचनात्मक मान्यताओं को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'मेरी साहित्यिक मान्यताएँ' पाठ के आलोक में डॉ. नगेन्द्र की आलोचना दृष्टि पर विचार कीजिए।

4. 'तुलसी साहित्य के सामंतविरोधी मूल्य' पाठ के आधार पर रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'नई कविता का आत्मसंघर्ष' पाठ के आधार पर मुक्तिबोध की काव्य-दृष्टि स्पष्ट कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 8911 IC

Unique Paper Code : 12051602

Name of the Paper : Hindi Nibandh Aur Anya Gadya Vidhaein
हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए – (8+7=15)

(क) अभिषेक की बात चली, मन में अभिषेक हो गया और मन में राम के साथ राम का मुकुट प्रतिष्ठित हो गया। मन में प्रतिष्ठित हुआ, इसलिए राम ने राजकीय वेश उतारा, राजकीय रथ से उतरे, राजकीय भोग का परिहार किया, पर मुकुट तो लोगों के मन में था, कौसल्या के मातृ-स्नेह में था, वह कैसे उतरता, वह मस्तक पर विराजमान रहा और राम भीगें तो भीगें मुकुट न भीगने

P.T.O.

पाये, इसकी चिंता बनी रही। राजा राम के साथ उनके अंगरक्षक लक्ष्मण का कमर-बंद दुपट्टा भी (प्रहरी की जागरुकता का उपलक्षण) न भीगने पाये और अखंड सौभाग्यवती सीता की मांग का सिंदूर न भीगने पाये, सीता भले ही भीग जाये।

अथवा

लोभियों का दमन योगियों के दमन से किसी प्रकार कम नहीं होता। लोभ के बल से वे काम और क्रोध को जीतते हैं, सुख की वासना का त्याग करते हैं, मान-अपमान में समान भाव रखते हैं। अब और चाहिए क्या ? जिससे वे कुछ पाने की आशा रखते हैं वह यदि उन्हें दस गालियाँ भी देता है तो उनकी आकृति पर न रोष का कोई चिह्न प्रकट होता है और न मन में ग्लानि होती है। न उन्हें मक्खी चूसने से घृणा होती है और न रक्त चूसने में दया। सुन्दर-से-सुन्दर रूप देखकर वे अपनी एक कौड़ी भी नहीं भूलते।

(ख) जिस बृहत्तर भारत के लिए हरेक भारतीय को उचित अभिमान है, क्या उसका निर्माण इन्हीं घुमक्कड़ी की चरण-धूलि ने नहीं किया? केवल बुद्ध ने ही अपनी घुमक्कड़ी से प्रेरणा नहीं दी, बल्कि घुमक्कड़ों का इतना जोर बुद्ध से एक दो शताब्दियों पूर्व ही था, जिसके ही कारण बुद्ध जैसे घुमक्कड़-राज इस देश में पैदा हो सके। उस वक्त पुरुष ही नहीं, स्त्रियाँ तक जम्बूस-वृक्ष

की शाखा ले अपनी प्रखर प्रतिभा का जौहर दिखाती, बाद में कूपमंडूकों को पराजित करती सारे भारत में मुक्त होकर विचरा करतीं थीं।

अथवा

शूद्र द्विज (या ब्राह्मण) का पूर्व-रूप है, वैसे ही जैसे मूर्ति का पूर्व-रूप अनगढ़ पत्थर। और मैं अपनी अनगढ़ता को गर्व से देखता हूँ, इसलिए कि जब तक अनगढ़ हूँ तभी तक विश्वविराट की मूर्तियों की सम्भावनाएँ मुझमें सुरक्षित हैं। गढ़ा गया नहीं कि एकरूपता, जड़ता गले पड़ी। श्रीकृष्ण की मूर्ति का पत्थर श्रीकृष्ण ही की मूर्ति भावना का प्रतीक रह जाता है। उसे राधा बनाना असंभव है।

2. 'जुबान' निबंध में लेखक ने जुबान की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है, स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'आचरण की सभ्यता' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

3. 'कुटज' निबंध की तात्विक विवेचना कीजिए।

अथवा

'रस आखेटक' निबंध की मूल संवेदना लिखिए। (15)

4. 'निराला की साहित्य साधना' पाठ के आधार पर निराला के जीवन संघर्षों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

आत्मकता के तत्त्वों के आधार पर 'अपनी खबर' की समीक्षा कीजिए। (15)

5. रेखाचित्र के तत्त्वों के आधार पर 'सुभान खाँ' पाठ का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

'अज्ञेय के साथ' पाठ के आधार पर अज्ञेय की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (15)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 8784 **IC**

Unique Paper Code : 12057608

Name of the Paper : हिंदी की भाषिक विविधताएँ

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS – DSE**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. वाचिक हिंदी के क्षेत्रीय रूपों का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

साहित्यिक भाषा के रूप में हिंदी की विविधता पर प्रकाश डालिए।

2. निर्धारित पदों के आधार पर कबीर की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। (15)

अथवा

अमीर खुसरो की मुकरियों का प्रतिपाद्य लिखिए।

3. बनारसीदास रचित अर्धकथानक' आत्मकथा की कसौटी पर खरी उतरती है - स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

गालिब की शायरी तत्कालीन समाज का जीवंत दस्तावेज है - विवेचन कीजिए।

4. 'रानी केतकी की कहानी' के कथानक की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

फणीश्वरनाथ रेणु की 'पंचलैट' कहानी की शिल्पगत विशेषताएँ बताइए।

5. निम्नलिखित उद्धरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (8)

(क) मेरे दिल कूँ किया बेखुद तेरी अंखियों ने आखरि कूँ,
कि ज्यूँ बेहोश करती है शराब आहिस्ता - आहिस्ता
हुआ तुझ इश्क सूँ ए आतिशीं रू दिल मिरा पानी,
कि ज्यूँ गलता है आतिश सूँ गुलाब आहिस्ता - आहिस्ता

अथवा

वक्त बेवक्त मोहे वाकी आस,

रात दिन वह रहत मेरे पास,

मेरे मन को करत सब काम,

ए सखी साजन ना सखि राम

(ख) जोरहिं अजितनाथ के छंद। लिखहिं नाममाला भरि बंद ।।

च्यारौं काज करहिं मन लाइ। अपनी अपनी बिरिया पाइ ।।

इहि बिधि च्यारि महीनें गए। च्यारि काज संपूरन भए ।।

करी नाममाला सै दोइ। राखे अजित छंद उरपोइ ।। (7)

अथवा

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलनेवालों में से एक कोई बड़े पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े घाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक

भौं चढ़ाकर, आँखे फिराकर लगे कहने- यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भारवापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छों से अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 8785 **IC**

Unique Paper Code : 12057609

Name of the Paper : भारतीय साहित्य : पाठपरक अध्ययन

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – C.B.C.S. – DSE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :-

(क) सब जातों की जड़ एक ही है,
कौन इस संसार में निर्धारित कर सकता है कि
किसकी प्रशंसा की जाए और किसकी निन्दा ?
क्यों हम किसी अछूत से घृणा करें,जब वह भी
हमारी तरह पैदा हुआहै, उसमें भी वह हाड़ मांस है,
उसकी कौन सी जाति है,
जो हम सबके अन्दर बसता है ?

P.T.O.

अथवा

आओ नाचें, गाएंगे, जी भर मोद मनाएंगे!
आनंद-छंद-मय, स्वतंत्रता पर मोद मनाएंगे!
बम्हन-ऐयर के रौब दबदबों के दिन अब बीत गए!
गोरांग फिरंगी लाट-साहबों के दिन अब बीत गए!
भिक्षादानों के दिन, भिखमंगी के दिन अब बीत गए।

(ख) हमारे घर के भीतर
बहुत सारी स्त्रियों के बीच जो कोई हो ऐसी
विधाता की सर्वप्रथम कृति सी
समझ लेना, बस वही है दूसरी मेरी जान
सहचर के अभाव में, कम बोलने वाली चकई
बहुतों के बीच भी अकेली
बड़ी ही बैचेनी से काट रही होगी वियोग के दिन
दिखाई देती होगी शिशिर ऋतु में पालों से बर्बाद कमलिनी की तरह।

अथवा

किसी दिन यहाँ महा ओंकार की अविराम ध्वनि
हृदय के तार में ऐक्य के मन्त्र से झंकृत हुई थी।

तप के बल से 'एक' के अनल में 'बहु' की आहुति दे
भेद-भाव भुलाकर एक विराट हृदय को जगाया था।
उसी साधना, उस आराधना की
यज्ञशाला का द्वार आज खुला है
सबको यहाँ सर झुकाकर मिलना होगा -
इस भारत के महामानव के सागर-तट पर।

(ग) भावना प्रधान महादेव अपने पौराणिक नाम राशि महादेव की तरह आशुतोष तो थे ही, साथ-साथ जरा-सा धक्का लगने पर निराश हो जाने का स्वभाव भी रखते थे। इसी कारण जीवन में प्राप्त हुई छोटी-छोटी निराशाओं ने उन्हें जीवन से तंग बना दिया होगा। तारुण्य के कारण इस निराशा की भवना का प्राबल्य बढ़ गया होगा।

अथवा

उसके उन उद्‌गारों से मैं थोड़ी देर के लिए मैं विचारमग्न हो जाताद्य। पश्चिम की ओर आँखों से ओझल होते हुए उस तेजस्वी बिम्ब की ओर मैं - एक बार ध्यानपूर्वक देखता। मेरे छोटे से मन में भावों का तूफान-सा आ जाता। एक हाथ से घोड़ों की वल्गाएँ संभालता हुआ, शोण की दृष्टि बचाकर, आँखों से ओझल होनेवाले उस तेज को मैं दूसरे हाथ से विदाई देता। मन में एक और ही तरह की व्याकुलता होने लगती। (3×10=30)

2. 'सप्तपर्णी' के आधार पर रामकाव्य के काव्य-सौंदर्य का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

नामदेव **अथवा** ललद्यद की भक्ति-भावना का विवेचन कीजिए।

3. वल्लतोल की काव्य सम्वेदना पर विस्तृत निबंध लिखिए। (15)

अथवा

'गीतांजलि' के आधार पर टैगोर की मानवीय चेतना की व्यापकता पर प्रकाश डालिए।

4. 'हयवदन' की पद्मिनी का चरित्र चित्रण कीजिए। (15)

अथवा

'अग्निकुंड में खिला गुलाब' शीर्षक की सार्थकता पर विचार करते हुए पाठ का सार लिखिए।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9000 **IC**

Unique Paper Code : 12057611

Name of the Paper : अवधारणात्मक साहित्यिक पद

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS – DSE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य है।

1. लक्षणा और व्यंजना में अंतर स्पष्ट करते हुए लक्षणा के भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

उपमा अलंकार और उसके भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

2. महाकाव्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

काव्य-हेतु के विभिन्न अवयवों पर प्रकाश डालिए।

3. जादुई यथार्थवाद की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए यथार्थवाद से उसकी भिन्नता रेखांकित कीजिए। (12)

अथवा

शास्त्रवाद की मुख्य साहित्यिक स्थापनाओं पर विचार कीजिए।

4. आधुनिकता का आशय बताते हुए आधुनिकता और आधुनिकतावाद में अंतर स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

उपन्यास के स्वरूप और उसके तत्त्वों का विवेचन कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (9×3=27)

(क) काव्य-लक्षण ;

(ख) खंडकाव्य ;

(ग) मानववाद ;

(घ) प्रतीक ;

(ङ) छंद ;

(च) उत्तर-आधुनिकता।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9001 **IC**

Unique Paper Code : 12057612

Name of the Paper : Hindi Rangmanch

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS–DSE**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. पारंपरिक रंगमंच की प्रमुख शैलियों का सामान्य परिचय दीजिए।

अथवा

आधुनिक हिंदी रंगमंच की प्रदर्शन परंपरा का विवेचन कीजिए। (15)

2. हिंदी रंगमंच के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए।

अथवा

P.T.O.

'भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) ने हिंदी रंगमंच को नयी सोच और दिशा दी है'- इस कथन के आलोक में इप्टा का महत्त्व स्पष्ट कीजिए। (15)

3. आधुनिक हिंदी रंगमंच की यथार्थवादी शैली का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

आधुनिक हिंदी रंगमंच के विकास में एब्सर्ड नाटकों के महत्त्व का विश्लेषण कीजिए। (15)

4. 'इब्राहिम अलकाजी ने हिंदी रंगमंच को नई ऊँचाई प्रदान की है'- इस कथन के आलोक में उनकी रंग-दृष्टि का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

हाल ही में प्रस्तुत किसी नाटक की रंगमंचीय समीक्षा कीजिए। (15)

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए: (8,7)

(i) बिदेसिया;

(ii) पृथ्वी थिएटर;

(iii) भारत भवन रंगमंडल, भोपाल;

(iv) श्यामानंद जालान की रंग-दृष्टि।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 8644 **IC**

Unique Paper Code : 12053407

Name of the Paper : भाषा और समाज (Bhasha Aur Samaj)

Name of the Course : **B.A. (H) HINDI – CBCS SEC**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. भाषा और समाज का अंतर्संबंध स्पष्ट कीजिए।

अथवा

समाज भाषाविज्ञान का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। (15)

2. भाषा और जातीयता की समाज में क्या भूमिका है - विश्लेषित कीजिए।

अथवा

P.T.O.

भारत के संदर्भ में बहुभाषिकता की स्थिति स्पष्ट कीजिए। (15)

3. जेंडर भाषा-अस्मिता को कैसे प्रभावित करता है ? स्त्री वर्ग और पुरुष वर्ग की भाषा के अन्तर को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

भाषा और संस्कृति के अन्त:संबंध का विश्लेषण कीजिए। (15)

4. भाषा सर्वेक्षण के विभिन्न नमूनों पर विचार कीजिए।

अथवा

भाषा-सर्वेक्षण के स्वरूप की विवेचना कीजिए। (15)

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए :

(क) भाषा और वर्ग

(ख) भाषा का समाजशास्त्र

(ग) पिजिन व क्रियोल

(घ) एस. एम. एस. की भाषा (8,7)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 8433 **IC**

Unique Paper Code : 12055206

Name of the Paper : Patkatha Tatha Samvad Lekhan (पटकथा तथा संवाद लेखन)

Name of the Course : **GE for Hons. : Hindi – CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'पटकथा पट के लिए लिखी गयी कथा है' - इस कथन को स्पष्ट करते हुए पटकथा की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

एक अच्छी पटकथा लिखते हुए किन बिंदुओं पर विचार करना जरूरी है ? सोदाहरण लिखिए। (14)

2. फीचर फिल्म के सन्दर्भ में पटकथा-लेखन की विधि पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

अथवा

डाक्यूमेंट्री की पटकथा कैसे लिखी जाती है ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिये । (14)

3. संवाद से आप क्या समझते हैं ? अच्छे संवाद की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये ।

अथवा

संवाद को ध्यान में रखते हुए मूक फिल्मों के मुकाबले सवाक फिल्मों की शक्तियों और सीमाओं पर प्रकाश डालिए । (14)

4. धारावाहिक के लिए संवाद-लेखन करते हुए किन बातों का ध्यान रखना होता है ?

अथवा

'सिनेमा के मनोरंजन का गहरा सम्बन्ध उसके संवादों के साथ है।' सोदाहरण विवेचन कीजिये । (14)

5. इनमें से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए : (6+6+7)

(क) स्टेप आउटलाइन

(ख) दृश्य और शॉट का अंतर

(ग) कहानी के फिल्मांतरण में संवाद

(घ) "मेरे पास माँ है"

(ङ) डाक्यूमेंट्री के लिए शोध का महत्व

(1100)

This question paper contains 2 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 8541

Unique Paper Code : 12055401 IC

Name of the Paper : हिंदी का वैश्विक परिदृश्य

Name of the Course : GE for Hons.–Hindi CBCS

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'प्रवासी साहित्यकारों ने हिंदी भषा को वैश्विक पहचान दी है।' इस कथन के सम्बन्ध में अपने विचार लिखिए। 15

अथवा

विश्व की बदलती परिस्थितियों में प्रवासी साहित्य हिंदी भाषा में किस प्रकार योगदान दे रहा है? स्पष्ट कीजिए।

2. 'वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा के योगदान में मॉरीशस की विशेष भूमिका रही है।' आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'संयुक्त राष्ट्र का सदस्य होने के बावजूद संयुक्त राष्ट्र में हिंदी भाषा की स्थिति आदर्श नहीं है।' इस कथन के आलोक में संयुक्त राष्ट्र में हिंदी की स्थिति पर विचार कीजिए।

P.T.O.

3. क्या हिंदी सिनेमा हिंदी भाषा को वैश्विक बनाने में योगदान दे रहा है? स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'हिंदी सिनेमा विश्व के अन्य देशों के साथ सांस्कृतिक सम्बन्धों को विकास देने का विशिष्ट माध्यम है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

4. अन्तरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों की हिंदी भाषा के विकास में क्या भूमिका है? 15

अथवा

इक्कीसवीं सदी में हिंदी विश्व की चुनौतियों का सामना करते हुए प्रगति पर है? विवेचन कीजिये।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 8+7=15

(*i*) दंगल फिल्म का वैश्विक संदर्भ

(*ii*) मॉरीशस का गिरमिटिया साहित्य

(*iii*) किसी **एक** प्रवासी साहित्यकार का वैश्विक संदर्भ

(*iv*) भारत में अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन की आवश्यकता।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 6975 **IC**

Unique Paper Code : 72052802

Name of the Paper : हिन्दी भाषा और संप्रेषण

Name of the Course : **Hindi : Ability Enhancement Compulsory Course**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सम्प्रेषण का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके महत्व पर प्रकाश डालिए। (10)

अथवा

हिन्दी भाषा की संप्रेषणशीलता में कहावतों और मुहावरों के योगदान पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

2. संप्रेषण के मौखिक और लिखित रूपों के मूलभूत अन्तर पर प्रकाश डालिए। (10)

अथवा

P.T.O.

संप्रेषण की बाधाओं और उनके समाधान का उल्लेख कीजिए।

3. संवाद का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए। (10)

अथवा

प्रभावी संप्रेषण की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

4. अनुवाद की परिभाषा देते हुए, अनुवाद के प्रकारों का उल्लेख कीजिए। (10)

अथवा

विश्लेषण व व्याख्या को परिभाषित करते हुए उनके अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित पर टिप्पणी कीजिए : (6+6+6)

(i) संप्रेषण के मॉडल **अथवा** संप्रेषण की प्रक्रिया।

(ii) सामाजिक संप्रेषण **अथवा** व्यवसायिक संप्रेषण।

(iii) वैयक्तिक संप्रेषण **अथवा** भ्रामक संप्रेषण।

6. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए : (6+6+5)

(i) अनुवादक के गुण **अथवा** संप्रेषण के माध्यम।

(ii) विश्लेषण **अथवा** अन्वय।

(iii) गहन अध्ययन **अथवा** अध्याहार।